पेरिस शांति समझौता और टर्की

11 Nov 1918 को प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हुआ। युद्ध जनित समस्याओं पर विचार विमर्श करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय शांति सम्मेलन का आयोजन किया गया। पेरिस सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन 18 जनवरी 1919 को हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन फ्रांस के राष्ट्रपति पॉइंकेयर (Poincare) ने किया तथा सर्वसम्मति से सम्मेलन के कार्यों का सभापति निर्वाचित किया गया।

पेरिस शांति सम्मेलन 18 जनवरी 1919 को वर्साय के शाही महल में प्रारंभ हुआ।

इस समिति में चार बड़े देशों के केवल चार प्रतिनिधियों को सम्मिलित किया गया था। ये प्रतिनिधि निम्नवत थे :

1) वुड्रो विल्सन – संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति
2) लॉर्ड जार्ज – इंग्लैंड के प्रधानमंत्री और उदार दल के प्रमुख नेता
3) क्लीमेंशो – फ्रांस के प्रधानमंत्री तथा पेरिस शांति सम्मेलन के अध्यक्ष।
4) ऑरलेण्डो – इटली का प्रधानमंत्री

उद्देश्य —

सम्मेलन का उद्देश्य

पराजित राष्ट्रों के साथ विजेता राष्ट्रों का व्यवहार निश्चित करना था। तुर्की और पश्चिमी एशिया पर मित्र राष्ट्रों की सेनाओं का अधिकार था। ईरान

ईराक, सीरिया, मेसोपोटामिया, फिलिस्तीन तथा तुर्की के अन्य भाग ब्रिटिश सेनाओं के अधिकार में थे।

दमिश्क में शाह फैसल अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर रहा था तथा अपनी बात स्वीकार कराने के लिए पेरिस पहुंच चुका था।

दूसरी ओर डा० वाइज़मेन भी यहूदियों की राष्ट्रीय गृह की मांग को लेकर पेरिस पहुंच चुके थे।

फ्रांस और इटली समझौतों के अनुसार अपने हिस्से चाहते थे।

ग्रीक की आँखे स्मरना पर लगी हुई थी।

इटली अनातोलिया को अधीन करना चाहता था।

स्वयं तुर्की में समझौतों के विरुद्ध विरोध की संभावना थी।

ग्रीस और इटली ने तुर्की की भूमि पर सेनाएँ उतार कर अधिकार करने का प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप तुर्की राष्ट्रीय अपमान का बदला के विरुद्ध सशक्त हो पश्चिमी राष्ट्रों की साम्राज्यवादी गतिविधियों के विरुद्ध खड़ा हो गया।

अरबों के असंतोष को दूर करने के लिए विल्सन ने एक कमीशन की नियुक्ति की। अरबों ने कमीशन

के सामने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की सैनिक सफल नहीं हो सका तथा सैनरेमो सम्मेलन के संरक्षित शासन की व्यवस्था स्वीकार करनी पड़ी।

इस प्रकार से इन अखिल समस्याओं का उदय हो चुका था, ~~[illegible]~~ जो इस प्रकार थी :

1) युद्ध की अवधि में विभिन्न प्रदेशों तथा जनशक्ति व धनशक्ति की हुई हानि का अनुमान लगाना।

2) पराजित देशों के साथ सम्पन्न होनेवाली संधियों की रूप रेखा को निर्धारित करना।

3) भविष्य में युद्ध की संभावनाओं को समाप्त करने के लिए आवश्यक प्रबन्ध और व्यवस्था करना।

4) मित्रराष्ट्रों की क्षतिपूर्ति करना।

5) स्थायी रूप से शांति स्थापना करना।

सेव्र की संधि

पराजित टर्की के भाग्य का निर्णय पेरिस शांति सम्मेलन में तैयार की गई सेव्र की संधि (10 Aug 1920) से हुआ। वस्तुतः यह एक आरोपित संधि थी जिसे विजयी राष्ट्रों ने टर्की पर थोप

किया था।

सेव्र की संधि के अन्तर्गत की गई प्रादेशिक व्यवस्था को 3 भागों में बाटा गया है :

प्रथम, यूरोप विशेषतः थ्रेस की व्यवस्था जिसका प्रभाव यूनान, बुल्गेरिया और तुर्क लोगों पर पड़ा।

दूसरा, जलडमरूमध्य तथा कुस्तुनतुनिया का अन्तर्राष्ट्रीयकरण जिसका संबंध तुर्की, इंगलैंड, फ्रांस और इटली से था।

तीसरा, एशिया माइनर, इराक, फिलिस्तीन, सीरिया तथा अरबों की समस्याएं जिनका संबंध यूनानी तुर्क, अरब और यहूदी लोगों से था और जिसने पूर्व में राष्ट्र निर्माण की विकट समस्या को जन्म दिया।

~~संधि के अनुसार प्रादेशिक व्यवस्थाएं इस प्रकार की गई :—~~

~~[illegible]~~

सेव्र की संधि —

युद्ध में हारे हुए देशों के साथ 10 अगस्त 1920 को तुर्की के साथ सेव्र की संधि हुई। इस संधि का निश्चय पेरिस शांति सम्मेलन में कर लिया गया था। यह विजेता राष्ट्रों की पराजित तुर्की पर थोपी गई संधि थी। इसके अनुसार प्रादेशिक व्यवस्थाएं इस प्रकार की गई :—

प्रादेशिक व्यवस्था -

(1) हैजाज एक स्वतंत्र राज्य मान लिया गया।
(2) फिलिस्तीन, मेसोपोटामिया और सीरिया पर से तुर्की का नियंत्रण समाप्त हो गया।
(3) मिस्र, सूडान, साइप्रस, त्रिपोलिया, मोरक्को और ट्यूनिशिया से भी उसका अधिकार समाप्त हो गया।
4) पूर्वी थ्रेस स्मार्ना एवं एजियन द्वीप यूनान को दे दिया गया। इस प्रकार ग्रीस की सीमाओं का विस्तार किया गया।
5) आर्मीनिया को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।
6) कुर्दों की स्वतंत्रता को भी तुर्की को स्वीकार करना पड़ा।
7) जलडमरूओं पर अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण स्थापित हो गया तथा यह क्षेत्र सैन्यविहीन घोषित कर दिया गया।
8) तुर्की की सेना की संख्या 50,000 निश्चित कर दी गई तथा अनिवार्य सैनिक सेवा समाप्त कर दी गई। उसकी जल सेना भी लगभग समाप्त कर दी गई।
9) ब्रिटेन, फ्रांस और इटली को मिलाकर एक वित्तीय आयोग की व्यवस्था की गई जिसका कार्य तुर्की के बजट कर, सार्वजनिक ऋण आदि आर्थिक कार्यों पर नियंत्रण रखना था।
10) विदेशियों के विशेषाधिकारों को न केवल

केवल पुनर्जीवित किया गया अपितु उनमें वृद्धि भी की गई।

एक मित्र राष्ट्रीय नियंत्रण समिति बनाई गई जिसका कार्य संधि की शर्तों का पालन करना था। इसके अतिरिक्त फ्रांस, ब्रिटेन एवं इटली के मध्य एक समझौता हुआ जिसके अनुसार फ्रांस को सिलिसिया और इटली को दक्षिणी-पश्चिमी अनातोलिया प्रभाव क्षेत्र के रूप में प्राप्त हुआ।

सैनिकों की संख्या निश्चित करने के अलावे यह प्रतिबन्ध लगा दिया कि तुर्की की सेना मित्रराष्ट्रों के परामर्श के बिना कहीं आ-जा नहीं सकती है। जलसेना को बिल्कुल समाप्त कर दिया गया।

तुर्की पर संधि के द्वारा कई तरह के आर्थिक प्रतिबन्ध भी लगाए गए। ब्रिटेन, फ्रांस और इटली को मिलाकर एक आर्थिक कमीशन का निर्माण किया गया। इस कमीशन का काम तुर्की के सार्वजनिक ऋण, राजकीय बजट, सिक्के, टैक्स इत्यादि पर कड़ा नियंत्रण रखना था। तुर्की ने यह भी स्वीकार किया कि वह राज्य में रहने वाले आर्मेनियन, यूनानी, ईसाई अल्पसंख्यकों के साथ कभी बुरा बर्ताव नहीं करेगा और उनकी राष्ट्रीयता के विकास में पूरा-पूरा सहयोग प्रदान करेगा।

इस प्रकार तुर्की साम्राज्य के संबंध में जो नई व्यवस्था हुई उसके अनुसार चार लाख चालीस हजार

वर्तमान अधीन तुर्कों के हाथ से निकल गई। अब इसकी आबादी केवल 80 लाख रह गई और एक करोड़ बीस लाख व्यक्ति उसकी अधीनता से मुक्त हो गए। सैनिकों की संख्या घटा दी गई, जल सेना समाप्त कर दी गई और इसे एक छोटे से शक्तिहीन राज्य के रूप में परिवर्तित कर दिया गया।

सेव्र की संधि के कारण मिस्र, सूडान, साइप्रस, त्रिपोलितानिया, मोरक्को और ट्यूनीसिया से तुर्की का अधिकार पूर्ण रूप से उठ गया। इन देशों पर तुर्कों को जो अनेक प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त थे उन सबका अन्त हो गया। अरब, फिलिस्तीन, मेसोपोटामिया और सीरिया तुर्कों की अधीनता से मुक्त कर दिए गए और यूरोप में जो अनेक प्रदेश तुर्की के साम्राज्य में थे, उन्हें ग्रीस को दे दिया गया।

तुर्की के देश भक्तों ने इस आरोपित और अपमानजनक संधि का कड़ा विरोध किया, लेकिन तुर्की की ओर से सुल्तान मुहम्मद चतुर्थ के प्रतिनिधि ने सेव्र की संधि पर हस्ताक्षर कर दिए। आगे चलकर विद्रोहियों के नेतृत्व कमालपाशा ने की। तुर्की के साथ 24 जुलाई 1923 को एक नई संधि 'लौसान की संधि' (Treaty of Lausane) हुई।